ओम शान्ती 2-2-67 प्रातःक्लास

मीठे-2 रूहानी बच्चों प्रति बापका गुड मर्निंग। गुड मर्निंग के बाद बच्चों को कहा जाता है बाप को याद करो। बुलाते भी है हे पतित पावन आकर पावन बनाओ। तो बाप पहलें ही कहते है रूहानी बाप को याद करो। रूहानी बाप तो सबका है ही है। फादर को कब सर्वव्यापी नही माना जाता। यह तो बिलकुल अनादी पनें की भूल है। जो बाप आकर समझाते है। तो बाप समझाते है जितना हो सके पहलें-2 बाप को याद करो। कोई भी साकर वा आकार को याद नां करो सिवाय एक बाप के। यह तो बिलकुलसहज है नां। मनुष्य कहते है हम बिजी रहते है। फुरसत नही। परन्तु इसमें तो सदैव फुरसत है। बाप युक्ती बताते है। यह भी जानते हो बाप को याद करनें से ही हमारे पाप भस्म होंगें। मुख्य बात है यह। धन्धे आद की कोई मनाइ नही।वो सब करते हुये सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। यह तो समझते हो हम पतित है। साधु सन्त ऋषी मुनि आद सब साधना करते है। साधना की जाती है भगवानसें मिलनें की सो जब तक उनका परिचय नां हो तब तक तो मिल नही सक्तें। तुम जानते हो बाप का परिचय दुनियां में कोई को भी नही है। देह का परिचय तो सबको है। बाकी इस देह में जो आत्मा है उनका और बाप का कोई को परिचय नही है। शरीर कितना बड़ा है। बड़ी चीज का परिचय झट हो जाता है। आत्मा का परिचय तो जब बाप आवें तब दें। आत्मा और शरीर दो चीजें है। आत्मा एक बिन्दी है। और बहुत सुक्ष्म है। उनको कोई देख नही सक्ते। तो यहां जब आकर बैठते हो तो देहीअभिमानी होकर बैठना है। यह भी एक हॉस्पिटल है नां। आत्मा रूप एवर हैल्दी बननें लिये। यह है रूहानी हॉस्पिटल। बाप कितनी सहज तें सहज युक्ति बताते है एवर हैल्दी बननें की। आत्मा तो है अविनाशी। कब विनाश नही होती। आत्मा का ही सारा पार्ट है। आत्मा कहती है मैं कभी विनाश को नही पाती हूं। इतनी सब आत्मायें अविनाशी है। शरीर है विनाशी। आत्मा कब विनाश को नही पाती। अब तुम्हारी बुधी में यह बैठा हुआ है कि हम आत्मा अविनाशी है। हम 84जन्म लेते है। यह ड्रामा है इसमें धर्म स्थापक कौन-2 है, कब आते है कितनें जन्म लेते है, यह तुम जानते हो। 84जन्म जो गायें जाते है तो जरूर किसी एक ही धर्म के होंगें। सबके तो हो नही सक्ते। सब धर्म इकट्ठे तो आते नही। हम दूसरों का हिसाब क्यों बैठ निकालें। जानते है फलानें-2 समय पर धर्म स्थापन करनें आते है। उसकी फिर वृधी होती है। सबकी पिछाड़ी तो आखरीन होनी ही है। सतोप्रधान सें तमोप्रधान तो होना ही है। दुनिया जब तमोप्रधान होती है तो बाप आकर सतोप्रधान सतयुगी बनाते है। अब तुम बच्चें जानते हो कि हम भारत वासी ही फिर नई दुनिया में आकर राज्य करेंगें। और कोई धर्म नही होंगें। तुम बच्चों में से भी जिनको ऊंच मर्तबा लेना है वो याद का अच्छी पुरूषार्थ करते है। और समाचार भी लिखते है कि बाबा हम इतना समय याद में रह सकता हूं। रहता हूं। कई तो पूरा समाचार लज्जा के मारे देते नही। समझते है बाबा क्या कहेंगें। परन्तु मालूम तो पड़ता ही है नां कि तुम अगर पढ़ेंगें नही तो फेल हो जावेंगें। लौकिक मां बाप भी बच्चें की पढ़ाई सें समझ जाते है। यह तो बहुत बड़ा स्कूल है। यहां तो नम्बरवार बिठाया ही नही जा सकता। बुधी सें समझा जाता है। नम्बरवार तो होतें ही है नां। अभी अहमदाबाद में बाबा अच्छे-2 बच्चों को भेज देते है। वो चलें जाते है तो फिर लिखतें है महारथी चाहिये। तो जरूर समझते है नां वो हमारे सें होशियार नामी ग्रामी है। जब तक कोई नही है तो चला भी देते है। तो नम्बरवार होते है नां। प्रदर्शनी में भी अनेक प्रकार के आते है। तो गाइड्स खड़े रहनें चाहियें जांच करनें के लिये। रिसीव करनें वालें तो जानते ही है कि यह किस किस्म का आदमी है। तो उनको फिर इशारा करना चाहिये कि उनको तो समझाओ। तो सब समझसक्ते है। फर्स्ट ग्रेड, सैकिंड ग्रेड, थर्ड ग्रेड सब है। वहां तो सबको सर्विस करनी ही है। कोई बड़ा आदमी है तो जरूर बड़ें आदमी की सब खातरी तो करते ही है। यह तो कायदा है। यहां भी जो सर्विस का नाम निकलते है उनकी खातरी अथवा महिमा तो की जाती है नां। सबसें बड़ी खातरी है याद। महिमा की जाती है नां

यह फलानी बहुत धनवान है। रिलीजस माईंडिड है। अब तुम यह तो जानते हो ऊंच तें ऊंच भगवान है। कहते भी है ईश्वर ऊंच तें ऊंच है। फिर बोलों उनकी बायोग्राफी बताओ तो कह देंगें सर्वव्यापी है। बस, एकदम नीचें गिरा कर पट कर दिया। अब तुम तुम समझा सकते हो सबसें ऊंच तें ऊंच है भगवान। वो है मूल वतन वासी। सुक्ष्म वतन में देवतायें यहां रहते है मनुष्य। तो ऊंच तें ऊंच वो निराकार बाप ठहरा नां। उनको फिर सर्वव्यापी कह कर एक दम ऊपर सें धक्का देकर भित्तर ठिक्कर में ठोक देते है। ऐसे मनुष्यों को बन्दर उल्लु पाजी नही कहेंगें तो और क्या कहेंगें। एकदम हाईस्ट्रैट सें फिर लोस्ट्रैट लें आते है। गाड को हाईस्ट्रैट और लोस्ट्रैट थोड़ेई रखना होता है। वो तो मनुष्यों को रखना होता है। अब तुम जानते हो हम जो हीरें मिसल थे वों अब कौड़ी मिसल बन पड़ें। वो फिर भगवान के लिये कह देते है। खुद जब कौड़ी मिसल बन जाते है तो बाप को भी सर्वव्यापी कह देते है। अपनें सें भी जास्ती दुर्गती कर देते है। कुछ भी समझ नही। बाप को ही पहचानते नही। भारतवासियों को ही पहचान मिलती है फिर पहचान गुम हो जाती है। अब तुम बाप की पहचान सबको देते जाते हो। ढेरों को बाप की पहचान मिलेगी। तुम्हारा मुख्य चित्र है ही यह त्रिमूर्ती गोला और झाड़। इनमें कितनी रोशनी है। यह तो कोई भी कहेंगें यह ल.ना. सतयुग के मालिक थे। अच्छा सतयुग के आगें क्या था। यह भी अभी तुम जानते हो। अभी है कलियुग अन्त। और है भी प्रजा का प्रजा पर राज्य। अभी राजायें तो है नही। कितना फर्क है सतयुग की आद में भी राजायें थे और अब भी राजायें है। भल कोई वो पावर नही है परन्तु भण्डारें में पैसे डाल देते है तो वो टाईटल मिल जाता है। टाईटल खरीद करते है। महाराजा कोई हैं है नही सिर्फ टाईटल खरीद करते है। जोधपुर, बिकानेर, का राजा, नाम तो लेते है नां। यह नाम अविनाशी चला आता है। पहलें पवित्र महाराजायें थे। अब है अपवित्र। महाराजा अक्षर चला ही आता है। इन ल.ना. के लिये कहेंगें यह सतयुग के मालिकें थे। किससें राज्य लिया? अभी तुम जानते हो राजाई की स्थापना कैसे होती है। बाबा कहते है मैं तुमको अभी पढ़ाता हूं 21 जन्मों लिये। वो तो पढ़ कर इसी जन्म मैं ही बैरिस्टर बनते है। तुम अभी पढ़ कर भविष्य महाराजा महारानी बनते हो ड्रामा प्लान अनुसार। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। अभी है पुरानी दुनिया। भल कितनें भी अच्छे मकान है महल है परन्तु हीरें जवाहरों के तो बनानें की कोई की भी ताकत ही नही। सतयुग में सभी हीरें जवाहरों के महल बनते है। बनानें में कोई देरी थोड़ेई लगती है। यहां भी अर्थ कुईक होती है तो बहुत कारीगर लगा देते है एक दो वर्ष में सारा शहर खड़ा कर लेते है। नई दुहली बनानें में करके आठ दस वर्ष लगें थे। परन्तु यहां के लेबर्स और वहां के लेबर्स में तो फर्क रहता है नां। आजकल तो नई-2 इन्वेन्शन भी निकलती रहती है मकान बनानें की। साईंस का भी जोर है। सब कुछ तैयार मिलता है झट फ्लैट तैयार। बहुत जल्दी-2 बनते है। तो यह सब वहां काम तो आते है नां। यह सब साथ चलना है। संस्कार तो रहते है नां। यह साईंस के संस्कार भी चलेंगें। तो अब बाप बच्चों को समझाते रहते है कि पावन बनना है तो बाप को याद करो। बाप भी पहलें गुड़मानिंग कर फिर बच्चों को सिक्षा देतें है बच्चों बाप की याद में बैठो। चलतें फिरतें बाप को याद करो। क्यों कि जन्म जन्मान्तर का सिर पर बोझा है। सीढ़ी उतरतें-2 84 जन्म लिये है। अभी फिर एक ही जन्म में चढ़ती कला होती है। जितना बाप को याद करतें रहेंगें उतना ही खुशी भी होगी। ताकत मिलेगी। बहुत बच्चे है जिनको आगें नम्बर में रखा जाता है परन्तु याद है ही नही। भलें ज्ञान में तीखें है परन्तु याद की यादगार है नही। ज्ञान में तो बाबा सें भी तीखें चलें जाते है। क्यूं कि प्रैक्टिस होती रहती है, बहुतों सें मिलतें रहते है। बाप तो बच्चों की ही महिमा करते है। यह भी नम्बरवन में जाते है तो जरूर मेहनत भी करते होंगें। तुम हमेशा यह समझो कि शिव बाबा समझा रहे है तो बुधी का योग वहां ही लगा रहेगा। यह भी सिखातें होंगें नां। फिर भी कहते है बाप को याद करो। जिसको समझानें चित्र भी है।

भगवान कहा ही जाता है निराकार को। वो आकर शरीर धारन करते है। एक भगवान के बच्चें सब भाई-2 है। सब आत्मायें भी भाई-2 है। अभी इस शरीर में विराजमान है। सब अकाल मूर्त है। यह अकाल(आत्मा) मूर्त का तख्त है। अकाल तख्त कोई और खास चीज नही होती।यह तख्त है अकाल मूर्त का। अकाल मूर्त का अकाल तख्त। आत्मायें सब अकाल है। कितनी अति सुक्ष्म है। बाप है तो निराकार। अबवो अपना तख्त कहाँ से लावें? बाप कहते है मेरा भी यह तख्त है। मै आकर इस तख्त कालोन लेता हूँ। ब्रह्मा के साधारण बूढ़े तन में आकर बैठता हूँ। अब तुम जान गये हो।जब आत्माओं का यह तख्त है। मनुष्यों की ही बात की जाती है। जानवरों की तो बात ही नही। पहलें मनुष्य जो जानवरों से भी बदतर हो गये है वो तो सुधरें।कोई जनावरों की बात पूछें तो कहो पहलें अपना तो सुधार करो। सतयुग में तो जानवर भी बड़े अच्छे फर्स्ट क्लास होंगें। किचरा आद कुछ भी नही होगा। किंग के महल में किचरा आद पड़ जायें तो दण्ड डाल दें। जरा भी किचरा महल के अन्दर हो नां सके। वहाँ बहुत खबरदारी रहती है। पहरें पर रहते है। कब कोई भी जानवर आद अन्दर घुस नां सके। बहुत सफाई रहती है लज.के मन्दिर में भी कितनी सफाई रहती है। शैकर पार्वती के मन्दिर में कबूतर भी दिखातें है तो जरूर किचरा भी करते होंगें। शास्त्रों में तो बहुत ही दण्ड कथायें लगा दी है। अब बाप बैठ बच्चों को नम समझाते है उनमें भी थोड़े है जो धारन कर सकते है। बाकी तो कुछ भी नही समझते। पिछाड़ी तक भी बुद्ध के बुद्ध रह जाते है। बाप कितना समझाते है बहुत मीठा बनो। मुख से सदैव रत्न निकलनें चाहिये। तुम्हारा नाम ही रखा है रूप बसन्त। आत्मा की ही महिमा करते है नां। आत्मा कहती है मैं प्राईमिनिस्टर हूँ। फलाना हूँ। मैं शरीर का नाम यह है। अच्छा आत्मा किसके बच्चे? एक परमात्मा बापके। तो तो जरूर उनेंस वर्सा मिलता होगा। वो फिर सर्वव्यापी कैसे हो सकता? गातें भी है कि ऊच तें ऊच है फिर उनको ठिक्कर भित्तर में ठोक देतें है। कितनी गलानी करते है।बाप की गलानी करतें-2 पत्थर बुधी बन गये है। तुम समझते हो हम भी आगें कुछ नही जानते थे। अबकितनी बुधी खुली है। तुम कोई भी मन्दिर में जावेंगें समझतें हो यह तो सब झूठें है। 10 भुजाओं वाले हाथी की सुंड़ वालें को ई चित्र होते है क्या।वो सब है भक्ति की सामग्री। वास्तव में भक्ति होनी चाहिये एक शिव बाबा की जो कि सब का सदगती दाता है। तुम्हही बुधी में है कि यह लक्ष्मी नरायण भी 84जन्म लेकर दुर्गती को पायें हुये है। शिव बाबा नां आतें तो यह भी सदगती को पा नही सकते। ऊच तें ऊच बाप ही आकर सबको सदगती देते है। उनसें बड़ा कोई है नही। इन ज्ञानकी बातों को तुम्हारें में भी नम्बरवार धारन कर सकते है। धारना ही नही कर सकते है तो बाकी क्या काम के रहे। थोड़ी बहुत सर्विस करतें थे वहाँ सें आ गयें तो गोया कुछ भी नही करते है। जो थोड़ी बहुत उन्नती होती थी वो भी खत्म। अन्धों की लाठी बननें बदलें अन्धे ही बन जाते है। गायें जो दूध नही देती है उनकोपिंजरापरमें रखते है। यह फिर ज्ञान का दूध नही दे सकते। देखो अहमदाबाद में कला है,आगें बाम्बें में थी, उनको रूहानी सर्विस करनें का चांस मिलता नही था। कहती थी-सर्विस करनें बिना हमको लज्जा आती है। अभी अहमदाबाद में उनको चांस मिलाहै तो कितनी खुश है। सब उनकी महिमा करते है। तो अब जैसे गऊशाला वाली गऊ बन गई। बहुत है जो कुछ भी पुरुषार्थ नही करते। समझते ही नही कि हम कुछ तो किसीका कल्याण करें।अपनी ही तकदीर का खयाल नहीं फिर रहता। तो बाप कहेंगें इनकी तकदीर में नही है। अपनी सदगती करनें का पुरुषार्थ करना चाहिये नां। देहीअभिमानी बनना है। बाप कितना ऊच तें ऊच है।और आतें देखा कैसी पतित दुनिया पतित शरीर में है।उनको बुलाते पतित दुनिया में है।जब रावण दुःख देते है।रावण बिल्कुल ही भ्रष्ट बुधी कर देते है।जो अच्छा पुरुषार्थ करते है वो राजा रानी बन जाते है। जो पुरुषार्थ ही नहीकरते तो गरीब बन जाते है।तकदीर में ही नहीहै तो तदबीर ही नही कर सकते।कोई तो बहुत अच्छी तकदीर बना लेते है।हर एक अपनें को देख सकते है हम क्या सर्विस करते है।सेन्टरालती